मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान
समत्वं योग उच्यते
MDNIY
मो.दे.रा.यो.सं.

MDNIY

E-Newsletter

November 2025

www.yogamdniy.nic.in

प्रधान संपादक की कलम से

संपादकीय टीम

प्रधान संपादक

प्रो. (डॉ.) काशीनाथ समगंडी

निदेशक, मो.दे.रा.यो.सं.

प्रबंध संपादक

मो. तैयब आलम

संचार एवं प्रलेखन अधिकारी,
और उपनिदेशक (प्रभारी)

संपादक

सौदामिनी सिंह

वरिष्ठ सलाहकार (मीडिया)

संतोष सिंह

सलाहकार (मीडिया)

डिज़ाइन

निहाल हसनैन

वरिष्ठ सलाहकार (डिज़ाइनर)

ताज़ा जानकारी के लिए जुड़ेः

@mdniyayush

@mdniyyoga

@mdniy

@mdniyyoga

जब भारत अपने विकास के एक अत्यंत निर्णायक चरण में प्रवेश करने की तैयारी कर रहा है, ऐसे समय में मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान (मो.दे.रा.यो.सं.) जैसे संस्थानों की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। किसी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति केवल आर्थिक उपलब्धियों से नहीं आँकी जाती, बल्कि उसके नागरिकों के स्वास्थ्य, मानसिक दृढ़ता और चेतनात्मक विकास से निर्धारित होती है। इसी संदर्भ में, समग्र कल्याण की संस्कृति को प्रोत्साहित करने में मो.दे.रा.यो.सं. की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय दायित्व के रूप में उभरती है।

प्रधान संपादक

प्रो. (डॉ.) काशीनाथ समगंडी

निदेशक, मो.दे.रा.यो.सं.

आज के निरंतर परिवर्तित होते विश्व में समाज के प्रति सार्थक योगदान देना केवल हमारा कर्तव्य ही नहीं, बल्कि एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है। सत्यनिष्ठा, नैतिकता, समर्पण और उत्तरदायित्व जैसे मूल्य ही सतत विकास की मजबूत नींव का निर्माण करते हैं। वास्तविक सफलता प्राप्त करने का कोई त्वरित या आसान मार्ग नहीं होता–यह सदैव ईमानदारी, अनुशासन और निरंतर प्रयास के सिद्धांतों पर आधारित होती है। किसी भी संस्था की सुदृढ़ता, विशेषकर मानव विकास के प्रति समर्पित मो.दे.रा.यो.सं. जैसी संस्था की, इन मूल्यों के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता में निहित होती है।

मैं दृढ़तापूर्वक मानता हूं कि सच्चा नेतृत्व उदाहरण प्रस्तुत करके किया जाता है जैसे कि ईमानदारी एवं परिश्रम के साथ कार्य करना, दायित्वों का पूर्ण रूप से निर्वहन करना तथा विद्यार्थियों के विकास और संतुष्टि को सर्वोच्च प्राथमिकता देना। विद्यार्थियों की व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक उपलब्धियां हमारे संस्थान की मजबूती एवं उत्कृष्टता को दर्शाती हैं। जब विद्यार्थी आत्मविश्वास, जागरूकता और सुदृढ़ चरित्र के साथ आगे बढ़ते हैं, तो वे भारत की असीम संभावनाओं के प्रेरक दूत बनते हैं।

पिछले कुछ दशकों में योग का विकास अत्यंत उल्लेखनीय रहा है। इसके रूपांतरणकारी प्रभाव के कारण इसे वैश्विक स्तर पर व्यापक मान्यता मिली है। योग केवल शारीरिक अभ्यास नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है, जो व्यक्ति को प्रकृति से जोड़ती है, आत्म–जागरूकता को प्रखर बनाती है और आत्म–अनुशासन को विकसित करती है। नियमित अभ्यास से शरीर में लचीलापन, मन में स्थिरता और भावनाओं में संतुलन आता है। आज चिकित्सा विशेषज्ञ भी योग को निवारक स्वास्थ्य देखभाल और जीवनशैली प्रबंधन के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार और प्रोत्साहित कर रहे हैं।

स्कूल और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों में योग को शामिल करना केवल वांछनीय नहीं, बल्कि अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा के साथ योग और ध्यान को जोड़ने से हम विद्यार्थियों को जीवन का सामना स्पष्टता, दृढ़ता और सजग मानसिकता के साथ करने के लिए सक्षम बनाते हैं। यह उनके समग्र विकास–शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक–को पोषित करता है, जिससे वे जागरूकता और करुणा के साथ समाज की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

मो.दे.रा.यो.सं. ने सदैव इस दृष्टि को सार्थक करते हुए उत्कृष्ट शैक्षणिक अवसर प्रदान किए हैं, जिनके साथ विविध प्रकार की मनोरंजनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियां भी समाहित की गई हैं। ये पहल न केवल शिक्षा को प्रभावी बनाती हैं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, नवाचार की भावना तथा भावनात्मक संतुलन को भी सशक्त रूप से पोषित करती हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य और मानव उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्ध एक संस्थान के रूप में मो.दे.रा.यो.सं. भारत की एक अधिक स्वस्थ, सजग और प्रगतिशील भविष्य की यात्रा में एक दृढ़ स्तंभ के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

जैसे–जैसे विश्व आशा भरी दृष्टि से भारत की ओर देख रहा है, वैसे–वैसे यह और स्पष्ट होता जा रहा है कि हमारा उत्थान तभी संभव है, जब हम प्राचीन ज्ञान को आधुनिक आकांक्षाओं के साथ एकीकृत करें। योग केवल हमारी विरासत नहीं है–यह हमारे आगे बढ़ने का मार्ग है। इसके अभ्यास और समझ को पीढ़ियों तक सुदृढ़ करना न केवल हमारे राष्ट्र को आर्थिक रूप से, बल्कि चेतनात्मक रूप से भी समृद्ध करेगा।

भविष्य उन्हीं का होगा जो मूल्यों के साथ निर्माण करते हैं, स्पष्टता के साथ चिंतन करते हैं और उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करते हैं। ऐसे व्यक्तित्वों के निर्माण में मो.दे.रा.यो.सं. की भूमिका आने वाले वर्षों तक राष्ट्र की विकास गाथा में प्रतिध्वनित होती रहेगी।

From the Desk of Editor-in-Chief

Editorial Team

Editor-in-Chief
Prof. (Dr.) Kashinath Samagandi
Director, MDNIY

Managing Editor
Md. Taiyab Alam
Communication &
Documentation Officer,
and Deputy Director (I/c)

Editor
Saudamini Singh
Senior Consultant (Media)

Santosh Singh
Consultant (Media)

Design by
Nihal Hasnain
Senior Consultant (Designer)

Catch the latest updates:

@mdniyayush

@mdniyyoga

@mdniy

@mdniyyoga

As India prepares to enter one of its most decisive phases of growth, the responsibility of Institutions such as the Morarji Desai National Institute of Yoga (MDNIY) becomes more crucial than ever. A nation's progress is not determined solely by economic milestones but by the health, resilience and consciousness of its people. In this scenario, MDNIY's role in fostering a culture of holistic well-being acquires profound national importance.

In today's dynamic world, contributing meaningfully to society is not just a duty but a moral obligation. The values of integrity, ethics, dedication and responsibility form the foundation of sustainable development. There are no shortcuts to achieving true success—it must always remain rooted in principles of honesty, discipline and perseverance. The strength of any organisation, especially one committed to human development like MDNIY, lies in its unwavering adherence to these values.

I firmly believe in leading by example—working diligently, delivering on commitments and prioritising the growth and satisfaction of students. Their personal and professional success ultimately reflects the strength of our Institution. When students grow with confidence, consciousness and character, they become ambassadors of India's potential.

Editor-in-Chief
Prof. (Dr.) Kashinath Samagandi
Director, MDNIY

Over the past few decades, the evolution of Yoga has been remarkable, gaining global recognition for its transformative impact. Yoga is not merely a physical discipline; it is a way of life that connects individuals with nature, sharpens self-awareness and cultivates self-discipline. Regular practice brings flexibility to the body, stability to the mind and balance to the emotions. Today, even medical professionals acknowledge and encourage Yoga as an essential tool in preventive healthcare and lifestyle management.

The inclusion of Yoga in school and university curricula is not just desirable—it is imperative. By integrating Yoga and meditation into education, we prepare students to face life with clarity, resilience and a conscious mind. It nurtures holistic development—physical, mental, emotional and spiritual—ensuring individuals become responsible citizens capable of navigating societal challenges with awareness and compassion.

MDNIY has consistently upheld this vision by offering excellent educational opportunities supported by a diverse range of recreational and creative activities. These initiatives not only enhance learning but also nurture individuality, innovation and emotional well-being. As an Institution dedicated to national health and human excellence, MDNIY stands as a pillar supporting India's journey towards a healthier, more mindful and progressive future.

As global eyes turn to India, merging ancient insights with modern ambitions will elevate us. Yoga isn't just heritage; it's our roadmap forward. Yoga is not just our heritage—it is our path forward. Strengthening its practice and understanding across generations will empower our nation to grow not just economically, but consciously.

The future belongs to those who build with values, think with clarity and act with purpose. MDNIY's contribution in shaping such individuals will echo in the nation's growth story for years to come.

भारत ने पुणे में मनाया 8वां प्राकृतिक चिकित्सा दिवस

India celebrates 8th Naturopathy Day at Pune

राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान
NATIONAL INSTITUTE OF NATUROPATHY
8 वां प्राकृतिक चिकित्सा दिवस समारोह
November 2025
Acharya Devvrat
PRACTICAL

8वें प्राकृतिक चिकित्सा दिवस समारोह का समापन समारोह पुणे के यवलेवाड़ी स्थित निसर्ग ग्राम में संपन्न हुआ। राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय प्राकृतिक खाद्य उत्सव में नागरिकों, चिकित्सा विशेषज्ञों तथा छात्रों ने उत्साहपूर्ण सहभागिता दर्ज की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रत ने कहा, ″प्राकृतिक चिकित्सा केवल उपचार की विधा नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करने वाली एक समग्र जीवनशैली है। महात्मा गांधी ने एक स्वस्थ, आत्मनिर्भर और आध्यात्मिक रूप से जागरूक समाज की कल्पना की थी, और प्राकृतिक चिकित्सा उसी विचारधारा पर आधारित जीवन पद्धति है।“

कार्यक्रम में माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, श्री प्रतापराव जाधव, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा, ″सुदृढ़ स्वास्थ्य का आधार अनुशासित जीवनशैली, रसायन–मुक्त प्राकृतिक आहार और प्रकृति के अनुरूप जीवन जीने में निहित है। स्वास्थ्य कोई वस्तु नहीं, जिसे खरीदा जा सके, इसे अर्जित करना पड़ता है। जब व्यक्ति प्रकृति के प्रति ईमानदारी से जीता है और उसके कल्याण में योगदान देता है, तभी पृथ्वी का स्वास्थ्य भी बेहतर होता है।“

इस अवसर पर सुश्री कविता गर्ग, संयुक्त सचिव, आयुष मंत्रालय; सुचीता जोशी, पोस्टमास्टर जनरल, पुणे क्षेत्र और श्री अमरेंद्र सिंह, निदेशक–प्रभारी, एनआईएन समेत कई गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

इसी क्रम में डॉ. आई. एन. आचार्य, कार्यक्रम अधिकारी (योग चिकित्सा) ने ‘नेचुरोपैथी से नैचुरली वज़न कम करें’ विषय पर अपने विचार साझा करते हुए कहा, ″इस आयोजन का उद्देश्य प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को जन–जन तक पहुंचाना और इसे एक जीवनशैली के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित करना है।“

The valedictory function of the 8th Naturopathy Day celebrations culminated at Nisarg Gram, Yewalewadi, Pune. The three-day Natural Food Festival, organised by the National Institute of Naturopathy (NIN), received enthusiastic participation from citizens, medical practitioners, and students.

Presiding over the programme, Hon'ble Governor of Maharashtra, Shri Acharya Devvrat, stated, “Naturopathy is not just a method of treatment but a holistic way of life that fosters harmony between humans and nature. Mahatma Gandhi envisioned a healthy, self-reliant and spiritually conscious society, and naturopathy represents a lifestyle rooted in this philosophy.”

Hon'ble Union Minister of State (I/C), Ministry of Ayush Sh. Prataprao Jadhav, graced the event as the Chief Guest. In his address, he said, “The foundation of strong health lies in disciplined living, chemical-free natural food and living in alignment with nature. Health is not something that can be bought; it must be earned. When a person lives sincerely in accordance with nature and contributes to its well-being, the health of the planet also improves.”

The programme was also attended by several distinguished guests, including Ms. Kavita Garg, Joint Secretary, Ministry of Ayush; Ms. Suchita Joshi, Postmaster General, Pune Region, and Shri Amrendra Singh, Director In-charge, NIN.

While sharing his insights on 'Lose Weight Naturally Through Naturopathy' Dr. I. N. Acharya, Programme Officer (Yoga Therapy), MDNIY stated, “The objective of this observance is to spread awareness about the importance of naturopathy and inspire people to adopt it as a way of life.”

\`द हिंदू' में माननीय आयुष मंत्री का संपादकीय: पारंपरिक चिकित्सा की ओर तेज़ी से बढ़ता वैश्विक रुझान

'द हिंदू' में प्रकाशित एक संपादकीय में केंद्रीय आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव ने पारंपरिक चिकित्सा को आधुनिक स्वास्थ्य तंत्र के एक महत्वपूर्ण स्तंभ के रूप में विश्व स्तर पर मिल रही बढ़ती मान्यता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बढ़ती जीवनशैली–जनित बीमारियां और पर्यावरणीय क्षरण के चलते विश्व के कई देश अब समग्र और टिकाऊ स्वास्थ्य मॉडल की ओर बढ़ रहे हैं।

माननीय मंत्री जी ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों का उल्लेख करते हुए बताया कि उसके 90 प्रतिशत सदस्य–देश किसी न किसी रूप में पारंपरिक चिकित्सा का उपयोग करते हैं और अरबों लोग इसे प्राथमिक स्वास्थ्य साधन के रूप में अपनाए हुए हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पारंपरिक चिकित्सा केवल उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जैव–विविधता, पोषण, खाद्य सुरक्षा और आजीविका को भी सशक्त बनाती है।

माननीय मंत्री ने इस वैश्विक बदलाव में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए बताया कि भारत का 43.4 बिलियन डॉलर का आयुष क्षेत्र आज अनुसंधान और नवाचार का प्रमुख केंद्र बन चुका है। उन्होंने भारतीय मानक ब्यूरो में आयुष विभाग की स्थापना और अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन द्वारा वैश्विक आयुष मानकों के विकास जैसी पहलों का उल्लेख किया, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता बढ़ा रही हैं।

संपादकीय में विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्ल्यूएचओ) और भारत सरकार के बीच हुए उस समझौते का भी उल्लेख है, जिसके तहत नई दिल्ली में डब्ल्यूएचओ की पारंपरिक चिकित्सा पर दूसरी वैश्विक बैठक 17–19 दिसंबर, 2025 को आयोजित होगी।

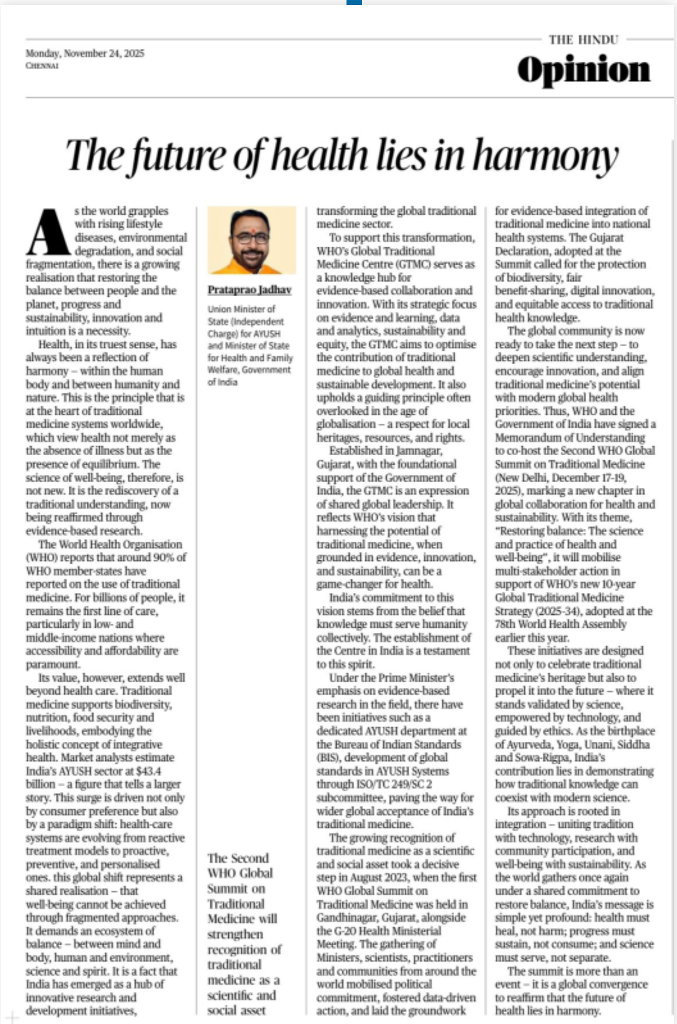

Monday, November 24, 2025
Chennai

THE HINDU
Opinion

The future of health lies in harmony

Prataprao Jadhav

Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH and Minister of State for Health and Family Welfare, Government of India

As the world grapples with rising lifestyle diseases, environmental degradation, and social fragmentation, there is a growing realisation that restoring the balance between people and the planet, progress and sustainability, innovation and intuition is a necessity.

Health, in its truest sense, has always been a reflection of harmony – within the human body and between humanity and nature. This is the principle that is at the heart of traditional medicine systems worldwide, which view health not merely as the absence of illness but as the presence of equilibrium. The science of well-being, therefore, is not new. It is the rediscovery of a traditional understanding, now being reaffirmed through evidence-based research.

The World Health Organisation (WHO) reports that around 90% of WHO member-states have reported on the use of traditional medicine. For billions of people, it remains the first line of care, particularly in low- and middle-income nations where accessibility and affordability are paramount.

Its value, however, extends well beyond health care. Traditional medicine supports biodiversity, nutrition, food security and livelihoods, embodying the holistic concept of integrative health. Market analysts estimate India's AYUSH sector at $43.4 billion – a figure that tells a larger story. This surge is driven not only by consumer preference but also by a paradigm shift: health-care systems are evolving from reactive treatment models to proactive, preventive, and personalised ones. this global shift represents a shared realisation – that well-being cannot be achieved through fragmented approaches. It demands an ecosystem of balance – between mind and body, human and environment, science and spirit. It is a fact that India has emerged as a hub of innovative research and development initiatives, transforming the global traditional medicine sector.

The Second WHO Global Summit on Traditional Medicine will strengthen recognition of traditional medicine as a scientific and social asset

To support this transformation, WHO's Global Traditional Medicine Centre (GTMC) serves as a knowledge hub for evidence-based collaboration and innovation. With its strategic focus on evidence and learning, data and analytics, sustainability and equity, the GTMC aims to optimise the contribution of traditional medicine to global health and sustainable development. It also upholds a guiding principle often overlooked in the age of globalisation – a respect for local heritages, resources, and rights.

Established in Jamnagar, Gujarat, with the foundational support of the Government of India, the GTMC is an expression of shared global leadership. It reflects WHO's vision that harnessing the potential of traditional medicine, when grounded in evidence, innovation, and sustainability, can be a game-changer for health.

India's commitment to this vision stems from the belief that knowledge must serve humanity collectively. The establishment of the Centre in India is a testament to this spirit.

Under the Prime Minister's emphasis on evidence-based research in the field, there have been initiatives such as a dedicated AYUSH department at the Bureau of Indian Standards (BIS), development of global standards in AYUSH Systems through ISO/TC 249/SC 2 subcommittee, paving the way for wider global acceptance of India's traditional medicine.

The growing recognition of traditional medicine as a scientific and social asset took a decisive step in August 2023, when the first WHO Global Summit on Traditional Medicine was held in Gandhinagar, Gujarat, alongside the G-20 Health Ministerial Meeting. The gathering of Ministers, scientists, practitioners and communities from around the world mobilised political commitment, fostered data-driven action, and laid the groundwork for evidence-based integration of traditional medicine into national health systems. The Gujarat Declaration, adopted at the Summit called for the protection of biodiversity, fair benefit-sharing, digital innovation, and equitable access to traditional health knowledge.

The global community is now ready to take the next step – to deepen scientific understanding, encourage innovation, and align traditional medicine's potential with modern global health priorities. Thus, WHO and the Government of India have signed a Memorandum of Understanding to co-host the Second WHO Global Summit on Traditional Medicine (New Delhi, December 17-19, 2025), marking a new chapter in global collaboration for health and sustainability. With its theme, "Restoring balance: The science and practice of health and well-being", it will mobilise multi-stakeholder action in support of WHO's new 10-year Global Traditional Medicine Strategy (2025-34), adopted at the 78th World Health Assembly earlier this year.

These initiatives are designed not only to celebrate traditional medicine's heritage but also to propel it into the future – where it stands validated by science, empowered by technology, and guided by ethics. As the birthplace of Ayurveda, Yoga, Unani, Siddha and Sowa-Rigpa, India's contribution lies in demonstrating how traditional knowledge can coexist with modern science.

Its approach is rooted in integration – uniting tradition with technology, research with community participation, and well-being with sustainability. As the world gathers once again under a shared commitment to restore balance, India's message is simple yet profound: health must heal, not harm; progress must sustain, not consume; and science must serve, not separate.

The summit is more than an event – it is a global convergence to reaffirm that the future of health lies in harmony.

Prataprao Jadhav highlights global shift towards Traditional Medicine in 'The Hindu' Editorial

In an editorial published in The Hindu, Union Minister Prataprao Jadhav emphasised the growing global recognition of traditional medicine as a vital pillar of modern health systems. He noted that rising lifestyle diseases and environmental degradation have compelled nations to seek holistic, sustainable models of well-being.

Hon'ble Mister highlighted the WHO's data showing that 90% of member-states use traditional medicine, with billions relying on it as their primary healthcare resource. He stressed that its value extends beyond treatment, contributing to biodiversity, nutrition, food security and livelihoods.

Hon'ble Minister underlined India's significant role in this global shift, pointing to the $43.4-billion Ayush sector and the country's emergence as a hub for research and innovation in traditional systems. He cited initiatives such as the Ayush department at BIS and the development of global Ayush standards through International Organization for Standardization, which are enhancing international acceptance.

The editorial noted the signing of an MoU between WHO and the Government of India to co-host the second WHO Global Summit on Traditional Medicine in New Delhi from December 17–19, 2025, under the theme "Restoring balance: The science and practice of health and well-being."

बर्लिन में संयुक्त कार्य समूह बैठक में भारत और जर्मनी ने पारंपरिक एवं एकीकृत चिकित्सा सहयोग को किया सुदृढ़

India and Germany Strengthen Cooperation on Traditional and Integrative Medicine at Joint Working Group Meet in Berlin, Germany

Bundesministerium für Gesundheit Bundesministerium für Gesundheit Bundesministerium für Gesundheit

आयुष मंत्रालय की संयुक्त सचिव, सुश्री मोनालिसा दास के नेतृत्व में मंत्रालय के प्रतिनिधिमंडल ने 18 से 20 नवंबर, 2025 तक बर्लिन में आयोजित भारत–जर्मनी वैकल्पिक चिकित्सा पर तीसरी संयुक्त कार्य समूह बैठक में भाग लिया। यह बैठक पारंपरिक एवं समन्वित स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में भारत–जर्मनी सहयोग को आगे बढ़ाने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई।

प्रतिनिधिमंडल के सदस्य प्रो. (डॉ.) काशीनाथ समगंडी, निदेशक, मो.दे.रा.यो.सं. ने 'स्वास्थ्य प्रणाली में पारंपरिक चिकित्सा का एकीकरण (रुझान/नवाचार/योजनाएं)' विषय पर विशेष रूप से योग के संदर्भ में प्रस्तुति दी। सत्र के समापन पर प्रो.(डॉ.) समगंडी ने वाई–ब्रेक का भी नेतृत्व किया।

आयुष मंत्रालय के सलाहकार (आयुर्वेद) डॉ. कौस्तभ उपाध्याय; सीसीआरएच के महानिदेशक डॉ. सुभाष कौशिक

The Ministry of Ayush delegation, led by Ms. Monalisa Dash, Joint Secretary participated in the 3rd India-Germany Joint Working Group Meeting on Alternative Medicine on 18 to 20 November 2025 in Berlin, marking another significant step in advancing Indo-German cooperation in the field of traditional and integrative healthcare.

Prof. (Dr.) Kashinath Samagandi, Director, MDNIY was one of the members of the delegation delivered a presentation titled "Integration of traditional medicine into the health system (trends/ innovations/ plans)" with a special reference to Yoga. He also led a refreshing "Y-Break" (Yoga Break) demonstration during a session break.

Dr. Koustabha Upadhyay, Adviser (Ayurveda), Ministry of Ayush; Dr. Subhash Kaushik, Director General, CCRH and Prof. (Vaidya) Rabinarayan Acharya, Director General, CCRAS were also the part of the session.

The productive deliberations, held in Germany and coordinated by Mr. H.S. Randhawa, Second Secretary (Economic & Commercial), Embassy of India, Berlin, were hosted by the German Federal Ministry of Health (BMG).

The discussions centred on three key pillars—

- Integrating traditional medicine into public health systems, establishing reimbursement pathways

तथा सीसीआरएएस के महानिदेशक प्रो. (वैद्य) रबीनारायण आचार्य भी इस प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा रहे।

जर्मनी में आयोजित इस कार्यक्रम का समन्वय भारत के बर्लिन स्थित दूतावास के द्वितीय सचिव (आर्थिक एवं वाणिज्यिक) श्री एच.एस. रंधावा ने किया गया तथा इसकी मेजबानी जर्मन संघीय स्वास्थ्य मंत्रालय (बीएमजी) ने की।

चर्चाओं का केंद्र तीन प्रमुख बिंदु रहे–

- पारंपरिक चिकित्सा को सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली में सम्मिलित करना
- रोगियों की पहुंच सुनिश्चित करने हेतु प्रतिपूर्ति (रिइम्बर्समेंट) प्रणालियों की स्थापना
- विनियामक अनुमोदन तंत्र को सुदृढ़ करना

इस यात्रा के प्रमुख कार्यक्रमों में शामिल थे–

- चारिटे विश्वविद्यालय के पारंपरिक एवं समन्वित चिकित्सा दक्षता केंद्र का दौरा, जहां सहयोगात्मक शोध के अवसरों की खोज तथा आयुष मंत्रालय के साथ प्रस्तावित एमओयू को आगे बढ़ाने पर चर्चा की गई।
- कम्युनिटी अस्पताल, हवेलहॉय (एंथ्रोपोसॉफिक मेडिसिन क्लिनिक) का निरीक्षण, जहां एकीकृत चिकित्सा एवं शोध प्रक्रियाओं की समीक्षा की गई।
- फेडरल ज्वाइंट कमेटी (जी–बीए) के साथ पारंपरिक चिकित्सा से संबंधित बीमा एवं प्रतिपूर्ति प्रणालियों पर विस्तृत चर्चा।

मंत्रालय ने आश्वस्त किया कि जर्मनी के साथ सतत सहयोग से अनुसंधान को गति मिलेगी, नियामक सामंजस्य को बढ़ावा मिलेगा तथा सुरक्षा, गुणवत्ता और वैज्ञानिक सत्यापन पर आधारित समन्वित स्वास्थ्य सेवाओं तक रोगियों की पहुंच सुलभ होगी।

Gemeinsamer Bundesausschuss
Der Gemeinsame Bundesausschuss
Rolle, Aufgaben, neue Methoden

for patient access, and strengthening regulatory approval mechanisms.

- These themes reflect the shared commitment of both nations to foster evidence-based and people-centred traditional medicine practices.

Key engagements of the visit included:

- Competence Center for Traditional and Integrative Medicine, Charité University, to explore collaborative research opportunities and advance the proposed MoU with the Ministry of Ayush.
- Community Hospital Havelhöhe – Clinic for Anthroposophic Medicine, reviewing integrative care and research practices.
- Federal Joint Committee (G-BA) for detailed discussions on insurance and reimbursement mechanisms relevant to traditional medicine.

The Ministry affirmed that sustained collaboration with Germany will help accelerate research, regulatory harmonisation, and patient access to integrative healthcare solutions rooted in safety, quality, and scientific validation.

मो.दे.रा.यो.सं. ने आईआईटीएफ–2025 में योग थेरेपी व स्वास्थ्य जागरूकता को दिया बढ़ावा

मो.दे.रा.यो.सं., आयुष मंत्रालय ने 14 से 27 नवम्बर, 2025 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित 44वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में सक्रिय रूप से भाग लिया। आगंतुकों ने उत्साहपूर्वक मो.दे.रा.यो.सं. के मंडप का अवलोकन किया और योग की विविधताओं से परिचित हुए। कई बच्चों ने योगासन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। उनके भाव–भंगिमाओं में झलकती खुशी और उत्साह ने माहौल को जीवंत बना दिया, वहीं अभिभावकों की तालियों ने पूरे परिसर में योग की उमंग फैला दी।

मो.दे.रा.यो.सं. ने अपनी विभिन्न सेवाओं–योग चिकित्सा, आहार परामर्श आदि का प्रदर्शन किया, जिनमें आगंतुकों ने गहरी रुचि दिखाई। लोगों ने वाई–ब्रेक, एक संक्षिप्त योग प्रोटोकॉल, का अभ्यास भी किया। मो.दे.रा.यो.सं. के छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'योग फ़्यूज़न' आकर्षण का केंद्र रहा। इस प्रस्तुति के माध्यम से संस्थान ने यह संदेश दिया कि योग पारंपरिक स्वास्थ्य परंपराओं और आधुनिक जीवनशैली की आवश्यकताओं के बीच एक सेतु है।

MDNIY promoted Yoga Therapy and Health Awareness at IITF- 2025

MDNIY, Ministry of Ayush, participated in the 44th India International Trade Fair (IITF 2025) at Bharat Mandapam, New Delhi, held from 14 to 27 November 2025. Visitors enthusiastically explored the MDNIY pavilion, immersing themselves in the world of Yoga. Several children participated in the Yogasana competition, their poses radiating joy and enthusiasm, as parents cheered them on, spreading the spirit of Yoga!

MDNIY showcased its services, including Yoga Therapy and Diet Consultancy, which drew keen interest. Visitors also practiced the Y-Break, a short Yoga module. The Yoga Fusion performance by MDNIY students was a highlight. Through this, MDNIY promoted Yoga as a bridge between traditional wellness and modern lifestyle needs.

Ayush
Ministry of Ayush
आयुष के साथ - स्वस्थ भारत, श्रेष्ठ भारत

भारतीय प्रवासी युवाओं के पेशेवर प्रतिनिधिमंडल ने किया मो.दे.रा.यो.सं. का दौरा

भारतीय प्रवासी समुदाय के विभिन्न देशों से आए 40 युवा पेशेवरों के एक समूह ने नवंबर, 11 2025 को योग के विभिन्न पहलुओं के ज्ञानवर्धन के लिए 'भारत को जानो कार्यक्रम' के 83वें संस्करण के तहत मो.दे.रा.यो.सं. का दौरा किया।

मो.दे.रा.यो.सं. के निदेशक प्रो. (डॉ.) काशीनाथ समगंडी ने प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया और योग के महत्व एवं प्रभावों पर चर्चा की। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल से भारतीय पारंपरिक ग्रंथों का संदर्भ लेने की अपील की और योगाभ्यास के पारंपरिक तरीकों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. आई. एन. आचार्य, कार्यक्रम अधिकारी (योग चिकित्सा) ने प्रतिनिधिमंडल के समक्ष संस्थान के विविध कार्यक्रमों और योग से जुड़ी गतिविधियों की जानकारी दी।

Young Professionals from the Indian Diaspora visit MDNIY

A group of 40 young professionals from the Indian diaspora, representing various countries, visited MDNIY on 11 November, 2025 as part of the 83rd edition of the "Know India Programme", to enhance their understanding of different aspects of Yoga.

Prof. (Dr.) Kashinath Samagandi, Director, MDNIY, warmly welcomed the delegation and discussed the significance and impact of Yoga. He encouraged the delegates to refer to traditional Indian scriptures and emphasised the importance of adopting conventional methods of Yoga practice.

Dr. I. N. Acharya, Programme Officer (Yoga Therapy), briefed the delegation on the Institute's various programmes and Yoga-related activities.

मो.दे.रा.यो.सं. में राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' का सामूहिक गान

मो.दे.रा.यो.सं. में 07 नवंबर, 2025 को राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' का सामूहिक गान आयोजित किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व संचार एवं प्रलेखन अधिकारी तथा प्रभारी उप–निदेशक, मो. तैयब आलम ने किया।

इस अवसर पर संस्थान के सभी अधिकारी, कर्मचारी और छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह कार्यक्रम भारत सरकार के उस संकल्प का प्रतीक है, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय गीत ”वंदे मातरम” की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को लोगों तक पहुँचाना और इसके माध्यम से राष्ट्रीय एकता एवं गौरव की भावना को मजबूत करना है।

गौरतलब है कि भारत सरकार ने राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर, 2025 से 7 नवंबर, 2026 तक देशभर में चलने वाले विविध सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन का निर्णय लिया है।

Joint recitation of the National Song 'Vande Mataram' at MDNIY

MDNIY organised a joint recitation of the National Song 'Vande Mataram' on November 07, 2025. Md. Taiyab Alam, Communication & Documentation Officer and Deputy Director(I/c.) led the programme.

All officers, staff members and a large number of students of the Institute participated in the event. The programme reflects the Govt. of India's commitment to promoting the historical and cultural legacy of 'Vande Mataram'.

It is noteworthy that, to mark the completion of 150 years of the National Song 'Vande Mataram', the Govt. of India has decided to organise a series of cultural programmes across the country from November 7, 2025 to November 7, 2026.

मो.दे.रा.यो.सं. ने आईसीएएस प्रोबेशनर्स के लिए विशेष योग सत्र का किया आयोजन

मो.दे.रा.यो.सं. ने 06 नवंबर, 2025 को भारतीय सिविल लेखा सेवा (आईसीएएस) के प्रॉबेशनरों के लिए विशेष योग सत्र का आयोजन किया। कार्यक्रम में वर्ष–2024 बैच के छह प्रॉबेशनरों ने भाग लिया, जो वर्तमान में सरकारी लेखा एवं वित्त संस्थान (आईएनजीएएफ) में विभागीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कर रहे हैं।

संस्थान के संचार एवं प्रलेखन अधिकारी एवं प्रभारी उप–निदेशक मो. तैयब आलम ने आईसीएएस प्रॉबेशनरों को योग को समग्र जीवनशैली के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

सत्र के दौरान प्रॉबेशनरों को योग के दर्शन, वैज्ञानिक सिद्धांतों तथा व्यावहारिक पहलुओं से अवगत कराया गया। सत्र में विशेष रूप से इस बात पर बल दिया गया कि योग तनाव प्रबंधन, मानसिक स्पष्टता, भावनात्मक संतुलन और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए एक प्रभावी उपकरण है।

MDNIY conducts Special Yoga Session for ICAS Probationers

MDNIY organised a special session for the India Civil Accounts Services (ICAS) probationers on November 06, 2025. A group of six probationers from the 2024 batch, who are currently undergoing their Departmental Training Course at the Institute of Government Accounts & Finance (INGAF), participated in the programme.

Communication & Documentation Officer and Deputy Director (I/c.) Md. Taiyab Alam motivated the ICAS probationers to embrace Yoga as a holistic lifestyle practice.

During the session, the probationers were introduced to the philosophy, scientific principles and practical aspects of Yoga. The session emphasised the importance of Yoga as an effective tool for stress management, mental clarity, emotional balance and physical well-being.

मो.दे.रा.यो.सं. ने फाउंडेशन कोर्स विद्यार्थियों के लिए यौगिक शुद्धिकरण अभ्यास पर कार्यशाला का किया आयोजन

मो.दे.रा.यो.सं. ने फाउंडेशन कोर्स (ऑफ़लाइन एवं ऑनलाइन), नवंबर बैच के विद्यार्थियों के लिए 22 नवंबर, 2025 को एक ज्ञानवर्धक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को यौगिक शुद्धिकरण क्रियाओं (षट्कर्म) के सूक्ष्म पहलुओं की जानकारी प्रदान करना था।

इस सत्र के द्वारा विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिली कि इन शुद्धिकरण तकनीकों को दैनिक यौगिक दिनचर्या में किस प्रकार से शामिल किया जा सकता है। प्रतिभागियों को पारंपरिक शोधन विधियों से परिचित कराया गया तथा शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के संवर्धन में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया।

कार्यशाला के दौरान योग प्रशिक्षक दिलीप कुमार, साहिल खोखर, कर्मवीर आर्य और हरप्रीत कौर की उपस्थिति दर्ज की गई। उनकी सहभागिता और व्यावहारिक मार्गदर्शन ने विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

MDNIY organises workshop on Yogic Cleansing Practices for Foundation Course students

MDNIY conducted a workshop for Foundation Course (Offline and Online), November batch on November 22, 2025. The objective of the workshop was to enhance the participants' knowledge and understanding of the finer aspects of yogic cleansing practices (Shatkarma).

The session enabled students to learn how these cleansing techniques can be effectively integrated into daily Yogic routines. Participants were introduced to the traditional methods of purification and were guided on their importance in achieving physical, mental, and emotional well-being.

Yoga instructors Dalip Kumar, Sahil Khokhar, Karmveer Arya, and Ms. Harpreet Kaur were present during the workshop. Their active involvement and practical inputs significantly contributed to the overall learning experience.

‘नशा मुक्त भारत’ अभियान की 5वीं वर्षगांठ पर मो.दे.रा.यो.सं. में व्याख्यान का आयोजन

नशा मुक्त भारत अभियान की 5वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में नवंबर 06, 2025 को मो.दे.रा.यो.सं. में ”मादक पदार्थों से मुक्ति के लिए योग एक प्रभावी साधन” विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें नई दिल्ली स्थित मानव व्यवहार एवं संबद्ध विज्ञान संस्थान (आईएचबीएएस), के निदेशक प्रो. डॉ. राजिंदर के. धमीजा ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की।

प्रो. धमीजा ने अपने ज्ञानवर्धक व्याख्यान में कहा, ”नशा एक मानसिक और सामाजिक बुराई है। जिससे समाज और परिवार बुरी तरह प्रभावित होते हैं।“

नशा मुक्ति में योग की सराहना करते हुए प्रो. धमीजा ने कहा, ”नशा मुक्त भारत की परिकल्पना को योग साकार रूप देता है।

उन्होंने इस दिशा में निरंतर योगदान के लिए मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम के दौरान संचार एवं प्रलेखन अधिकारी तथा प्रभारी उप–निदेशक मो. तैयब आलम ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और उनके जीवन व कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया।

कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य, मानव चेतना, डॉ. शुभम किरार सूर्यवंशी ने किया और सहायक आचार्य (योग चिकित्सा) एवं नोडल अधिकारी, नशा मुक्त भारत अभियान, डॉ. एस. लक्ष्मी कंधन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के दौरान संस्थान के सभी अधिकारियों, असिस्टेंट प्रोफेसर्स, कर्मचारियों सहित बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं की उपस्थिति देखी गई।

MDNIY organises Lecture to mark 5th anniversary of NMBA

To commemorate the 5th anniversary of the Nasha Mukt Bharat Abhiyaan (NMBA), a lecture on the theme “Yoga as an Effective Tool for Freedom from Substance Abuse” was organised on 06 November, 2025 at the auditorium of the MDNIY.

Prof. (Dr.) Rajinder K. Dhamija, Director, Institute of Human Behaviour and Allied Sciences (IHBAS), New Delhi, graced the occasion as the Chief Guest. In his thought-provoking address, he highlighted that addiction is a serious mental and social issue that adversely affects individuals, families and society at large.

Commending the role of Yoga in promoting de-addiction, Prof. Dhamija noted that Yoga provides a strong foundation for realising the vision of a drug-free India. He expressed deep appreciation for MDNIY’s sustained efforts in advancing Yoga for health and well-being.

The event commenced with a welcome address by Md. Taiyab Alam, Communication & Documentation Officer and Deputy Director (I/c), who introduced the Chief Guest and highlighted his significant contributions.

The programme was conducted by Dr. Shubham Kirar Suryawanshi, Assistant Professor (Human Consciousness). The session concluded with a Vote of Thanks delivered by Dr. S. Lakshmi Kandhan, Assistant Professor (Yoga Therapy) and Nodal Officer – Nasha Mukt Bharat Abhiyaan, who expressed gratitude to the Chief Guest, dignitaries, and participants.

The event witnessed participation from a large number of students, along with officials, Assistant Professors and staff members of the Institute, reflecting keen interest and support toward the objectives of the campaign.

मो.दे.रा.यो.सं. की पहल ने माता सुंदरी कॉलेज में व्यावहारिक कार्यशाला के माध्यम से योग शिक्षा को किया सुदृढ़

MDNIY's initiative strengthens Yoga education through Practical Workshop at Mata Sundri College

दिल्ली विश्वविद्यालय के माता सुंदरी कॉलेज फ़ॉर वुमेन में दो दिवसीय कार्यशाला "योग इन प्रैक्टिस" का आयोजन 19 एवं 21 नवंबर 2025 को किया गया। इस कार्यशाला का संचालन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अर्पित कुमार दुबे ने किया, जिन्होंने योग के दार्शनिक आधार और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को योग के विभिन्न आयामों से परिचित कराया गया, जिसमें दैनिक जीवन में योग की प्रासंगिकता, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में इसकी भूमिका, तथा अकादमिक एवं व्यक्तिगत विकास में योगिक सिद्धांतों के समावेश पर विशेष बल दिया गया। डॉ. दुबे ने प्रतिभागियों को मूल आसनों, प्राणायाम तथा सजगता से जुड़े अभ्यास कराए, साथ ही शास्त्रीय ग्रंथों एवं पारंपरिक यौगिक ज्ञान पर आधारित सत्र का संचालन किया।

कार्यशाला में विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सैद्धांतिक जानकारी और व्यावहारिक अभ्यास के संयोजन ने इन सत्रों को अत्यंत प्रभावी बनाया।

A two-day workshop titled "Yoga in Practice" was organized on 19 and 21 November 2025 at Mata Sundri College for Women, University of Delhi. The sessions were conducted by Dr. Arpit Kumar Dubey, Assistant Professor (Sanskrit), who provided an in-depth understanding of Yoga, highlighting its philosophical foundations as well as practical applications.

Throughout the workshop, participants were introduced to various dimensions of Yoga, including its relevance in daily life, its role in mental and physical well-being, and the integration of Yogic principles with academic and personal development. Dr. Dubey engaged the attendees through experiential practices such as asanas, breathing techniques, and mindfulness exercises, complemented by interactive discussions on classical texts and traditional Yogic wisdom.

The workshop recorded enthusiastic participation from both students and faculty members. The combination of theoretical insights and hands-on practice made the sessions highly impactful.

बीएचयू में मो.दे.रा.यो.सं. विशेषज्ञ ने तनाव मुक्ति और डिजिटल डिटॉक्स के लिए योग को दिया बढ़ावा

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय बीएचयू, वाराणसी के भारत अध्ययन केंद्र ने ‘स्वानुशासन और आत्म–जागरूकता के लिए योग’ के तहत 17 नवंबर 2025 को दो–सप्ताह चलने वाले पाठ्यक्रम पर एक प्रभावशाली सत्र आयोजित किया।

सत्र में मो.दे.रा.यो.सं. के सहायक आचार्य, योग शिक्षा, डॉ. पवन कुमार ने ‘आधुनिक विश्व में यौगिक जीवनशैलीः तनाव प्रबंधन और डिजिटल डिटॉक्स’ विषय पर ज्ञानवर्धक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि आज के समय में तनाव को नियंत्रित करने और डिजिटल उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने के लिए योग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डॉ. कुमार ने बताया कि यदि यौगिक सिद्धांतों को दैनिक जीवन में शामिल किया जाए, तो मानसिक संतुलन, भावनात्मक दृढ़ता और संपूर्ण स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है। उन्होंने तनाव नियंत्रित करने और डिजिटल ओवरलोड को कम करने हेतु सरल एवं व्यवहारिक योग तकनीकें भी साझा कीं।

MDNIY expert advocates Yoga for stress relief and digital detox at BHU

As part of the two-week course “Yoga for Self-Discipline and Self-Awareness” an impactful session was held on November 17, 2025 organised by the Bharat Adhyayan Kendra, Banaras Hindu University (BHU), Varanasi).

The session featured an insightful lecture by Dr. Pawan Kumar, Assistant Professor (Yoga Education), MDNIY, on ’Yogic Lifestyle in the Contemporary World: Stress Management and Digital Detox.’ He explained how Yoga is highly relevant today for managing stress and reducing excessive dependence on digital devices.

Dr. Kumar spoke about the challenges of modern life, especially rising stress levels and overuse of technology. He highlighted how incorporating Yogic principles into daily routine can help improve mental balance, emotional strength, and overall well-being. He also shared practical and easy-to-follow Yogic techniques that can help control stress and reduce digital overload.

बीएएमएस विद्यार्थियों ने मो.दे.रा.यो.सं. का किया शैक्षणिक भ्रमण

आयुर्वेदिक एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज एवं अस्पताल, करोल बाग, नई दिल्ली के बीएएमएस द्वितीय वर्ष (बैच 2022–2023) के 39 विद्यार्थियों ने 03 नवंबर, 2025 को मो.दे.रा.यो.सं. का शैक्षणिक भ्रमण किया। यह भ्रमण संस्थान के संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को योग संबंधी सिद्धांतों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना तथा समग्र स्वास्थ्य देखभाल में योग की भूमिका की समझ को सुदृढ़ करना था।

संस्थान पहुंचने पर विद्यार्थियों का स्वागत किया गया तथा उन्हें मो.दे.रा.यो.सं. की प्रमुख गतिविधियों से परिचित कराया गया। तत्पश्चात् विद्यार्थियों ने संस्थान परिसर के अलग–अलग विभागों, योग चिकित्सा इकाइयों, कक्षाओं और अनुसंधान सुविधाओं का अवलोकन किया।

इसके उपरांत यौगिक शुद्धि क्रियाओं (षट्कर्म) पर एक विशेष जीवंत प्रदर्शन आयोजित किया गया। विशेषज्ञों द्वारा जला नेती, सूत्र नेती एवं कुंजल क्रिया जैसे अभ्यासों के स्वास्थ्य लाभों की विस्तृत व्याख्या की गई। इसके बाद संस्थान के अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा ध्यान सत्र का भी आयोजन किया गया। इस ज्ञानवर्धक सत्र में विद्यार्थियों ने यौगिक अभ्यासों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को आयुर्वेद के अपने सैद्धांतिक अध्ययन से जोड़कर समझा।

BAMS Students Undertake Educational Visit to MDNIY

A group of 39 BAMS Second Year students (Batch 2022–2023) from Ayurvedic and Unani Tibbia College and Hospital, Karol Bagh, New Delhi, visited MDNIY on November 03, 2025. The visit was conducted under the guidance of faculty members of the Institution. The primary objective of the visit was to provide practical exposure to Yogic principles and enhance the students' understanding of Yoga as an integral component of holistic health care.

The students were warmly welcomed and introduced to the activities and key functions of MDNIY. A guided tour of the campus was conducted, during which the students were familiarised with various departments, Yoga therapy, classrooms, and research facilities.

A specialised live demonstration on Yogic cleansing techniques (Shatkarma) was organised, where experts explained the health benefits of practices such as Jala Neti, Sutra Neti, and Kunjal Kriya. Following the demonstration, a guided meditation session was conducted by experienced trainers to promote mental well-being and mindfulness.